केंद्रीय विद्यालय क्रमांक - ३, वायु सेना स्थल, मकरपुरा, वड़ोदरा

KENDRIYA VIDYALAYA NO-3, AFS, MAKARPURA, VADODARA

कृति

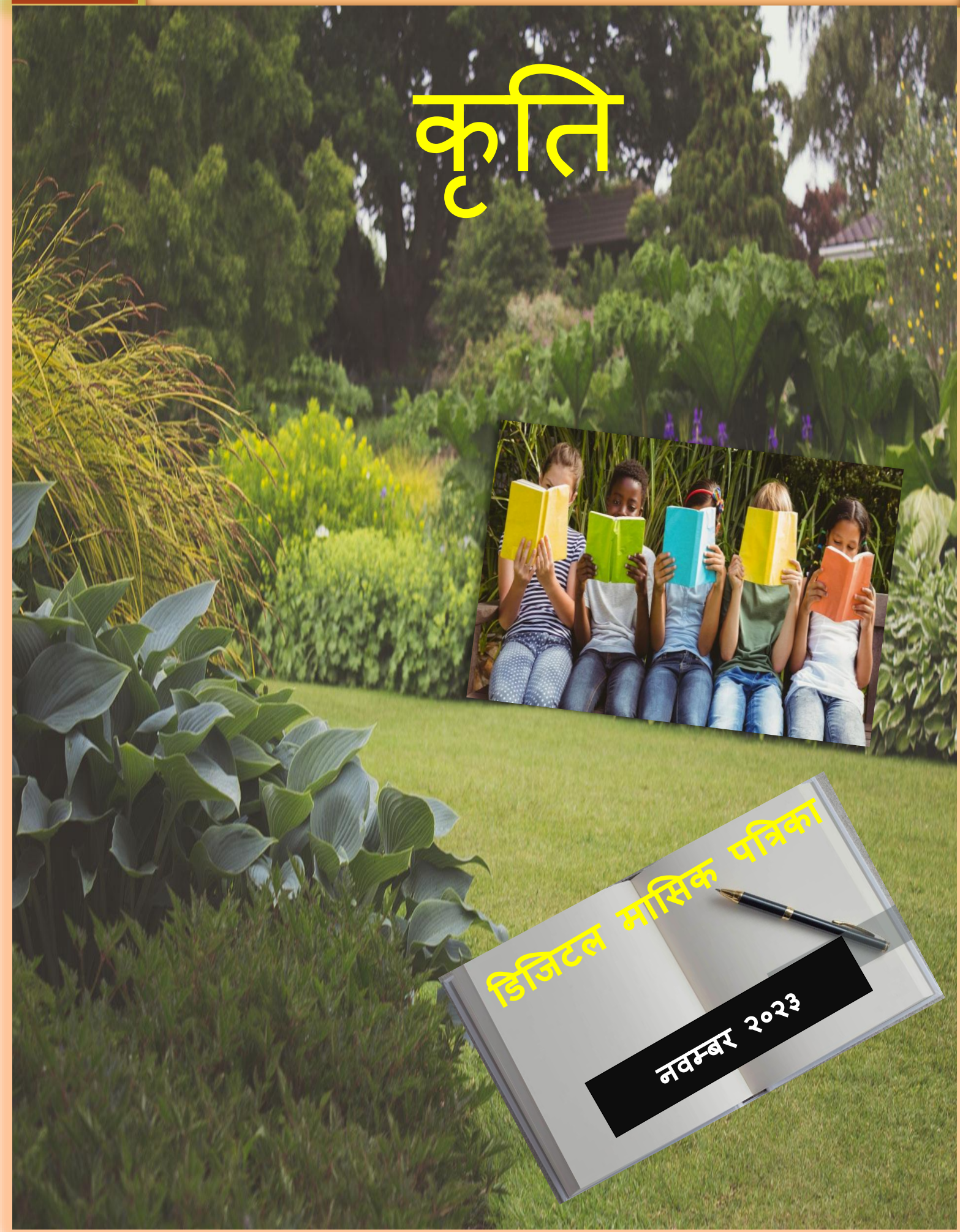

प्राचार्य की कलम से

“INVESTMENT IN EDUCATION GIVES BEST RETURN”

this showswhat is the importance of education in our life, if we prepare today then it's fruits will bear the best result tomorrow.

Kendriya Vidyalaya AFS Makarpura has always tried to give best possible education to our students. As per the NEP 2020 students' all-round development is very important Students should be equipped with various competencies but also in cocurricular activities. Throughout years we have been celebrating various important days and weeks to enhance better skills among students.

This magazine certainly reflects the motto of KVs and showcases the talent and potential of our students and teachers.

I appreciate efforts done by the teachers and students to bring out this magazine.

I believe that “It is a decision and not the condition that determines your result”

Khadi Mahotsav

खादी महोत्सव

(02-10-23 से 31-10-23)

खादी महोत्सव

केंद्रीय विद्यालय संगठन के तत्वाधान में विद्यालय में अक्टूबर व नवंबर माह में खादी महोत्सव का आयोजन किया गया| इस अवसर पर विद्यालय में वक्तव्य प्रतियोगिता और निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया| कुमारी शांभवी कक्षा ग्यारहवीं कुमारी स्नेहा कक्षा ग्यारहवीं, आरव गरासिया कक्षा दसवीं और यामिनी कक्षा सातवीं ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया| निबंध प्रतियोगिता में अनेक विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिसमें से क्षेत्रीय स्तर पर निबंध प्रतियोगिता में कुमारी सानवी मिश्रा कक्षा आठवीं ने भाग लिया| विद्यार्थियों ने अनेक कार्यक्रमों जैसे लेख और नारा लेखन, जीवन में खादी की उपयोगिता व महत्व आदि प्रतियोगिताओं में उत्साह पूर्वक भाग लिया| प्राचार्य जी ने भी खादी की उपयोगिता पर अपने विचार व्यक्त किए|

खादी राष्ट्र के लिए, खादी फैशन के लिए

खादी, जिसे अक्सर "~~सूत्र~~ स्वतंत्रता का कपड़ा" कहा जाता है, भारत के इतिहास और संस्कृति में एक अद्वितीय स्थान रखता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने खादी की कल्पना सिर्फ एक कपड़े के टुकड़े से कहीं अधिक की थी। यह आत्मनिर्भरता आर्थिक सशक्तिकरण का प्रतीक और भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में एक शक्तिशाली उपकरण था। आज, इस दृष्टिकोण को हमारे माननीय प्रधान मंत्री द्वारा पुनर्जीवित किया गया है जिन्होंने हमें 'खादी फॉर नेशन, खादी फॉर फैशन' का मंत्र दिया है। मंत्र के साथ इस दृष्टिकोण को फिर से जीवंत किया है।

खादी ने अपने पारंपरिक भूमिका को पार कर समकालीन फैशन में जगह।

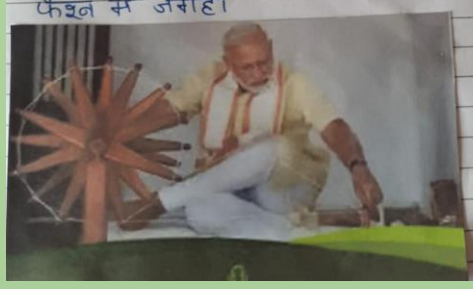

1

खादी राष्ट्र के लिए और खादी फैशन के लिए अनुच्छेद व चित्र।

खादी, जिसे अक्सर "स्वतंत्रता का कपड़ा" कहा जाता है, भारत के इतिहास और संस्कृति में एक अद्वितीय स्थान रखता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने खादी की कल्पना सिर्फ एक कपड़े के टुकड़े से कहीं अधिक की थी। यह आत्मनिर्भरता, आर्थिक सशक्तिकरण का प्रतीक और भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में एक शक्तिशाली उपकरण था आज, इस दृष्टिकोण को हमारे माननीय प्रधान मंत्री द्वारा पुनर्जीवित किया गया है, जिन्होंने हमें खादी फॉर नेशन, खादी फॉर फैशन का मंत्र दिया है।

खादी राष्ट्र के लिए, खादी फैशन के लिए

खादी, जो कभी भारत के स्वतंत्रता संग्राम का प्रतीक थी, अब एक फैशन स्टेटमेंट के रूप में विकसित हो गई है जो आधुनिक भारत की प्रतिध्वनि है। खादी के बारे में महात्मा गांधी का दृष्टिकोण केवल कपड़ो के बारे में नहीं था। बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ग्रामीण समुदायों के उत्थान और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने का एक साधन था। आज, हमारे माननीय प्रधान मंत्री ने 'खादी फॉर नेशन, खादी फॉर फैशन' मंत्र के साथ इस दृष्टिकोण को फिर से जीवंत किया है। खादी ने अपनी पारंपरिक भूमिका को पार कर समकालीन फैशन में जगह बना ली है। यह डेनिम, जैकेट, शर्ट, चश्मे सामान और यहाँ तक कि हैंडबैग जैसी सहायक वस्तुओं को भी सजाता है। इस परिवर्तन ने खादी को स्टाइल और स्थिरता का प्रतीक बना दिया है। खादी महोत्सव अभियान विशेष रूप से युवाओं के बीच खादी के महत्व और 'वोकल फॉर लोकल' के बारे में जागरूकता फैलाने में सहायक है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि स्थानीय उत्पादों का समर्थन करने से अर्थ-व्यवस्था, पर्यावरण और महिला सशक्तिकरण को कैसे लाभ होता है। राष्ट्र के लिए खादी, फैशन के लिए खादी सिर्फ एक चलन नहीं है; यह एक आंदोलन है जो भारत की विरासत का जश्न मनाता है और आत्मनिर्भर और पर्यावरण के प्रति जागरूक भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है। महात्मा गांधी की अमिट छवियों में एक तस्वीर वह है, जिसमें प्यारे बापू एक चरखे के साथ बैठे हैं और कताई में पूरी तरह मगन हैं। चरखा एक शक्तिशाली प्रतीक था, जिसका महात्मा गांधी ने उपनिवेशवाद और अन्याय के खिलाफ अपनी लड़ाई के दौरान उपयोग किया। इसका मकसद आत्मनिर्भरता और गरीबी के खिलाफ लड़ाई था। महात्मा गांधी का खादी का सामान इस्तेमाल करने का अत्यधिक समर्थन किया था। पिछले कुछ वर्षों के दौरान श्री नरेंद्र मोदी ने खादी को लोकप्रिय बनाने और इसे एक जन आंदोलन का रूप देने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। उनका आग्रह है कि सभी लोग खादी के सामान खरीदें, खासतौर से गांधी जयंती के दिन। प्रधानमंत्री खुद भी नियमित रूप से खादी पहनते हैं और वो ऐसा बेहद शुरुआती दिनों से कर रहे हैं। जब वो आरएसएस तथा भाजपा संगठन के लिए काम कर रहे थे। श्री मोदी ने एक मंत्र दिया- 'खादी देश के लिए, खादी फैशन के लिए'- इसके पीछे विचार ये है कि खादी राष्ट्रीय गर्व का प्रतीक बने, साथ ही एक फैशन स्टेटमेंट भी बने, जो युवाओं के बीच लोकप्रिय हो सके। उन्होंने कई बार कहा है, "जब हम एक खादी खरीदते हैं, तो हम उन लाखों बुनकरों के जीवन में उजाला कर रहे हैं, जो दिन रात कड़ी मेहनत करते हैं।

VIGILANCE AWARENESS WEEK

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

केंद्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल मकरपुरा वडोदरा में दिनांक 30 अक्टूबर से 5 नवंबर 2023 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया| इसका विषय था भ्रष्टाचारियों का विरोध करें और राष्ट्र के प्रति समर्पित रहे| नागरिकों की भागीदारी के जरिए सार्वजनिक जीवन में अखंडता और सत्य निष्ठा को बढ़ावा मिलता है| देश में चौमुखी विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्राथमिक सदनों में से एक शासन में पारदर्शिता लाना है| इस अवसर पर विद्यालय में शिक्षकों और विद्यार्थियों ने ई प्लेज ली, विद्यालय में भाषण प्रतियोगिता निबंध प्रतियोगिता, पोस्टर और नारा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया| सभी कार्यक्रमों में विद्यार्थियों व शिक्षकों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया|

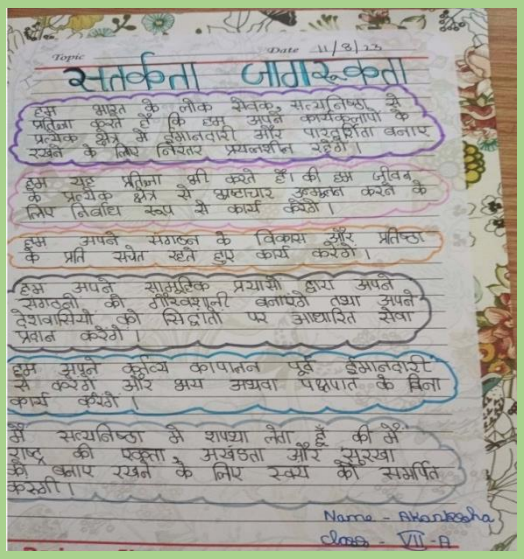

Topic सतर्कता जागरूकता Date 11/8/23

हम भारत के लोक सेवक, सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करते हैं कि हम अपने कार्यकलापों के प्रत्येक क्षेत्र में ईमानदारी और पारदर्शिता बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहेंगे।

हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं। की हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से भ्रष्टाचार उन्मूलन करने के लिए निर्बाध रूप से कार्य करेंगे।

हम अपने संगठन के विकास और प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहते हुए कार्य करेंगे।

हम अपने सामूहिक प्रयासों द्वारा अपने संगठनों को गौरवशाली बनाएंगे तथा अपने देशवासियों को सिद्धांतों पर आधारित सेवा प्रदान करेंगे।

हम अपने कर्तव्य का पालन पूर्ण ईमानदारी से करेंगे और भय अथवा पक्षपात के बिना कार्य करेंगे।

मैं सत्यनिष्ठा से शपथ लेता हूँ की मैं राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखने के लिए स्वयं को समर्पित करूंगा।

Name - Akanksha
Class - VII-A

संविधान दिवस

संविधान दिवस

केंद्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल मकरपुरा वडोदरा में दिनांक 25 नवंबर 2023 को संविधान दिवस का आयोजन किया गया| इस अवसर पर प्रार्थना सभा में भारत का संविधान उद्देशिका को विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा पढ़ा गया| शिक्षिका द्वारा संविधान के बारे में विद्यार्थियों को अवगत कराया गया| देश की अखंडता और विविधताओं को संजोकर रखने वाले संविधान पर हमें गर्व है| यह हमारे लोकतंत्र का आधार स्तंभ है|

Date-24/11/23
Total-51
Present-
26th November
Constitution Day 2023

BHARATIYA
BHASHA
UTSAV
मराठी मराठी
हिन्दी
తెలుగు లిపి
ગુજરાતી
മലയാളം
भाषा
বাংলা
ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା
ಕನ್ನಡ
संस्कृतम्
விக்கிப்பீடியா
اُردُو
অসমীয়া

भारतीय भाषा उत्सव

केंद्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल मकरपुरा वडोदरा में 28 सितंबर से भारतीय भाषा उत्सव का आयोजन किया जा रहा है| क्षेत्रीय भाषाओं और तकनीकी के माध्यम से अनेक क्रियाकलापों जैसे लेखन, नारा, पोस्टर लेखन, नृत्य कला, खानपान, साहित्य, मानवीय मूल्य और विचार प्रस्तुति आदि है|

तमिलनाडु के महाकवि भारती जी एक समाज सुधारक एवं स्वतंत्रता सेनानी, व बहु भाषाविद थे| इन्हीं से संबंधित विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं|

भाषा संगम

भाषा संगम 22 भारतीय भाषाओं में बुनियादी शब्दों के प्रयोग को सिखाने के लिए एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत शिक्षा मंत्रालय की एक पहल है। एक भारत श्रेष्ठ भारत की घोषणा माननीय प्रधान मंत्री द्वारा 31 अक्टूबर 2015 को सरदार वल्लभभाई पटेल की 140वीं जयंती के अवसर पर की गई थी। इस अभिनव प्रयास के माध्यम से संस्कृति का ज्ञान। केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय की भाषा संगम परियोजना के तहत 27 नवंबर 2018 से इसकी शुरूआत की गई। सभी कक्षाओं के छात्रों द्वारा प्रयोग के लिए 22 भाषाओं में पाँच सरल, आमतौर पर प्रयोग किए जाने वाले वाक्यों से युक्त एक लघु संवाद तैयार किया गया है।

नाम:- आयुषी साहु
कक्षा:- VIII-A
सदन:- नीला

TOPIC भाषाएँ अनेक भाव एक DATE

भारत सरकार ने प्रसिद्ध तमिल कवि और स्वतंत्रता सेनानी महाकवि सुब्रमण्यम भारती के जन्मदिन (11 दिसंबर) को भारतीय भाषा दिवस के रूप मनाने का प्रस्ताव किया है। भारतीय भाषा उत्सव 28 सितंबर से 11 दिसंबर 2023 तक आयोजित किया जाएगा। इसका उद्देश्य क्षेत्रीय भाषा और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना है। भारत एक बहुभाषिक देश है। यहाँ के अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोली व समझी जाती हैं। संविधान की आठवीं अनुसूची में निम्नलिखित 22 भाषाएँ शामिल हैं। भारतीय भाषा उत्सव के अंग के रूप में आयोजित इस शिखर सम्मेलन में तीन महत्त्वपूर्ण विषयगत सत्र शामिल होंगे (i) भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी (ii) भारतीय भाषाओं के माध्यम से प्रौद्योगिकी ये विषय भारतीय भाषा को बढ़ावा देने में प्रौद्योगिकी के एकीकरण पर जोर देंगे जिसमें शिक्षण, प्रशिक्षण, परीक्षा और शैक्षिक सामग्री के अनुवाद में इसकी भूमिका शामिल है। यह शिक्षा में भारतीय भाषाओं के तकनीकी रूप से समृद्ध भविष्य की दिशा तय करेगा। यह कार्यक्रम हमारे विद्यालय केन्द्रीय विद्यालय में भिन्न-भिन्न रूप से मनाया जा रहा है। कुछ गतिविधियाँ जो इसमें शामिल हैं वो हैं प्रश्नोत्तरी एवं शास्त्रीय नृत्य का आयोजन किया गया।

– सौम्या रंजन IX B

STAR WHITE

सुब्रमण्यम भारती

भारती जी का जन्म 11 दिसम्बर 1882 को भारत के दक्षिणी प्रान्त तमिलनाडु के एक गाव में एक तमिल ब्राह्मण परिवार में हुआ था। देश के स्वतंत्रता संग्राम के लिए उन्होंने जिस शस्त्र का प्रयोग किया, वह था उनका लेखन, विशेषतया कविता। उनकी कविताओं ने तमिलवासियों को जाग्रत कर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। एक कविता में सुब्रमण्यम भारती जी ने 'भारत का जाप करो' की सलाह दी है। वह एक तमिल कवि थे

सुब्रमण्यम भारती

तुम ज्योति हो मां
शौर्य स्वरूपिणी हो तुम मां
दुःख और कपट की संहारिका हो मां
तुम्हारी अनुकम्पा का प्रार्थी हूं मैं मां।

उनको 'महाकवि भारतियार' के नाम से भी जाना जाता है। उनकी कविताओं में राष्ट्रभक्ति कूट-कूट भरी हुई है। वह एक कवि होने के साथ-साथ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल सैनानी, समाज सुधारक, पत्रकार तथा उत्तर भारत व दक्षिण भारत के मध्य एकता-सेतु के समान थे।

सुब्रह्मण्यम भारती

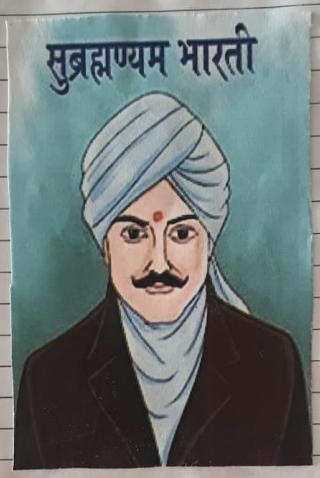

सुब्रमण्यम भारती का जन्म 11 दिसंबर, 1882 को मद्रास प्रेसीडेंसी के 'एट्टायपुरम' में हुआ था। संक्षिप्त परिचय: वे राष्ट्रवादी काल (1905-1920) के भारतीय लेखक थे, जिन्हें आधुनिक तमिल शैली का जनक माना जाता है। उन्हें 'महाकवि भारतियार' के नाम से भी जाना जाता है। वर्ष 1904 के बाद वह तमिल दैनिक समाचार 'स्वदेशमित्रन' से जुड़ गए। उनकी मृत्यु: 11 सितंबर 1921।

PRESENTED BY:- SHWETA GUPTA (COMPUTER INSTRUCTOR)